हिन्दुस्तान।
वाराणसी, गुरुवार, 15 फरवरी 2024
08

ज्योतिष काल गणना पर आधारित व्यापक विज्ञान

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर बुधवार को संस्कृत विवि के योग साधना केंद्र में प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी को पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान देते अतिथिगण।

वाराणसी,प्रमुख संवाददाता। पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर बुधवार को संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र में संस्कृत कवि सम्मान, पं. मुनिवर मिश्र स्मृति व्याख्यान एवं संस्कृत कवि-गोष्ठी हुई। विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास एवं संस्कृत विवि के श्रमण विद्या संकाय की ओर से हुए आयोजन की अध्यक्षता आचार्य सुधाकर मिश्र ने की।

'ग्रह-नक्षत्र का दैनिक जीवन पर प्रभाव' विषय पर बीएचयू के ज्योतिष विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रामचंद्र पांडेय ने कहा कि ज्योतिष एक बहुआयामी, व्यापक और काल-गणना पर आधारित प्राचीनतम विज्ञान है। विज्ञान के समस्त अनुशासनों का जो मूल गणित है, वही ज्योतिष का भी मूलाधार है। अध्यक्षता प्रो. सुधाकर मिश्र ने की। वर्ष 2024 के पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी को दिया गया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन प्रकाश उदय ने किया। शंखध्वनि पं. वाचस्पति त्रिपाठी एवं स्वस्ति-वाचन डॉ. जयंतपति त्रिपाठी ने किया। संस्कृत कवि-गोष्ठी में आशीष मणि त्रिपाठी, देवेन्द्र घिमिर, उपेन्द्र पाण्डेय, पवन कुमार शास्त्री, विवेक कुमार पाण्डेय, उमाकांत चतुर्वेदी, कमला पाण्डेय,, विजय कुमार पाण्डेय, शिवराम शर्मा, सदाशिव कुमार द्विवेदी, मनुलता शर्मा, कमलाकांत त्रिपाठी, विजय कुमार पाण्डेय ने सामयिक विषयों पर काव्य-पाठ किया।

10 दैनिक जागरण वाराणसी, 15 फरवरी, 2024

ग्रहों की चाल से जीवन पर पड़ता है असर

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र में आयोजित हुई गोष्ठी

- पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत विधि में व्याख्यान एवं संस्कृत कवि-गोष्ठी
- ज्योतिष भविष्य को जानने से अधिक वर्तमान को साधने का जरिया : प्रो. रामचंद्र पांडेय

जागरण संवाददाता, वाराणसी : ग्रह-नक्षत्र हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। जब भी ग्रह के चाल बदलते हैं। उसका प्रभाव व्यक्ति के मन पर भी पड़ता है। ग्रह-नक्षत्र खराब होते हैं तो सबसे पहले मन विचलित होता है। मन अस्थिर होने पर हम गलत निर्णय ले लेते हैं। जीवन की सुख-शांति व सफलता के लिए मन का मजबूत होना अति आवश्यक होता है।

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यान एवं संस्कृत कवि-गोष्ठी में काव्य पाठ करते धर्मदत्त चतुर्वेदी। प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, डा. दयानिधि मिश्र, प्रो. रामचंद्र पांडेय, प्रो. सुधाकर मिश्र (कुर्सी पर बैठे बाएं से) व अन्य ●

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर बुधवार को संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र के समिति कक्ष में 'ग्रह-नक्षत्र का दैनिक जीवन पर प्रभाव' विषयक व्याख्यान में ये बातें वक्ताओं ने कही। विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास तथा श्रमण विद्या संकाय संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संस्कृत कवि सम्मान, पं. मुनिवर मिश्र स्मृति व्याख्यान एवं संस्कृत कवि-गोष्ठी . में बीएचयू ज्योतिष विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रामचंद्र पांडेय ने कहा कि ज्योतिष में मन का सीधा संबंध चंद्रमा से जुड़ा है। अच्छे ग्रह-नक्षत्र ही हमारे जीवन राजयोग व मंगलकारी योग बनाते हैं। ज्योतिष भविष्य को जानने से अधिक जीवन के वर्तमान को साधने का जरिया है। हमारी कृषि को भी इस ज्योतिष का संबल मिला है।

अध्यक्षता करते हुए प्रो. सुधाकर मिश्र ने पं. विद्यानिवास मिश्र के वैदुष्य के अनुरूप बताया। इस मौके पर प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी को वर्ष 2024 के 'पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान' से सम्मानित किया गया। वहीं संस्कृत कवि-गोष्ठी में आशीष मणि त्रिपाठी, देवेन्द्र घिमिर, उपेन्द्र पांडेय, पवन कुमार शास्त्री, चंद्रकांता राय, विवेक कुमार पाण्डेय, उमाकांत चतुर्वेदी, कमला पांडेय, कमलाकांत त्रिपाठी, धर्मदत्त चतुर्वेदी सहित कवियों ने शाश्वत-सामयिक विविध विषयों को लेकर भावपूर्ण काव्य-पाठ किया। स्वागत सचिव डा. दयानिधि मिश्र, संचालन प्रो. चंद्रकांता राय व धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी ने किया। डा. राम सुधार सिंह, प्रकाश उदय, राजनाथ त्रिपाठी, उमेश त्रिपाठी आदि थे।

वाराणसी | बृहस्पतिवार ● 15.02.2024
amarujala.com/varanasi
अमर उजाला 4

भविष्य को जानने और वर्तमान को साधने का माध्यम है ज्योतिष

वाराणसी। पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर बुधवार को संस्कृत कवि सम्मान, पं. मुनिवर मिश्र स्मृति व्याख्यान और संस्कृत कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के योग साधना केंद्र में आयोजित कार्यक्रम के दौरान पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी को प्रदान किया गया।

विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास और श्रमण विद्या संकाय की ओर से आयोजित कार्यक्रम में पं. मुनिवर मिश्र स्मृति व्याख्यान हुआ। बीएचयू के ज्योतिष विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रामचंद्र पांडेय ने कहा कि ज्योतिष एक बहुआयामी, व्यापक और काल-गणना पर आधारित प्राचीनतम भारतीय विज्ञान है।

ज्योतिष भविष्य को जानने का उतना नहीं, जितना जीवन के वर्तमान को साधने

पं. विद्या निवास मिश्र की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथि। संवाद

का जरिया है। अध्यक्षता प्रो. सुधाकर मिश्र ने की। संस्कृत कवि गोष्ठी में युवा कवियों ने भावपूर्ण काव्य-पाठ किया। संचालन प्रो. चंद्रकांता राय ने किया। डॉ. दयानिधि मिश्र, प्रकाश उदय, पं. वाचस्पति त्रिपाठी, डॉ. जयंतपति त्रिपाठी, राजनाथ त्रिपाठी आदि रहे। ब्यूरो

मेरा कर्मक्षेत्र संस्कृत था और भावक्षेत्र हिंदी

'हिंदी में यदि आंचलिक बोलियों के शब्दों को प्रोत्साहन दिया जाए तो दुरूह राजभाषा से बचा जा सकता है, जो बेहद संस्कृतनिष्ठ है' — यह कहकर आंचलिक बोलियों की वकालत करने वाले पं. विद्यानिवास मिश्र स्वयं संस्कृत और हिंदी के प्रकांड विद्वान थे। अपने लेखन से ललित निबंध विधा को नई ऊंचाई देने वाले पंडितजी प्रसिद्ध निबंधकार, भाषाविद् और चिंतक थे। पद्म भूषण और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्यता जैसे सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित विद्यानिवास मिश्र से डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र की बातचीत...

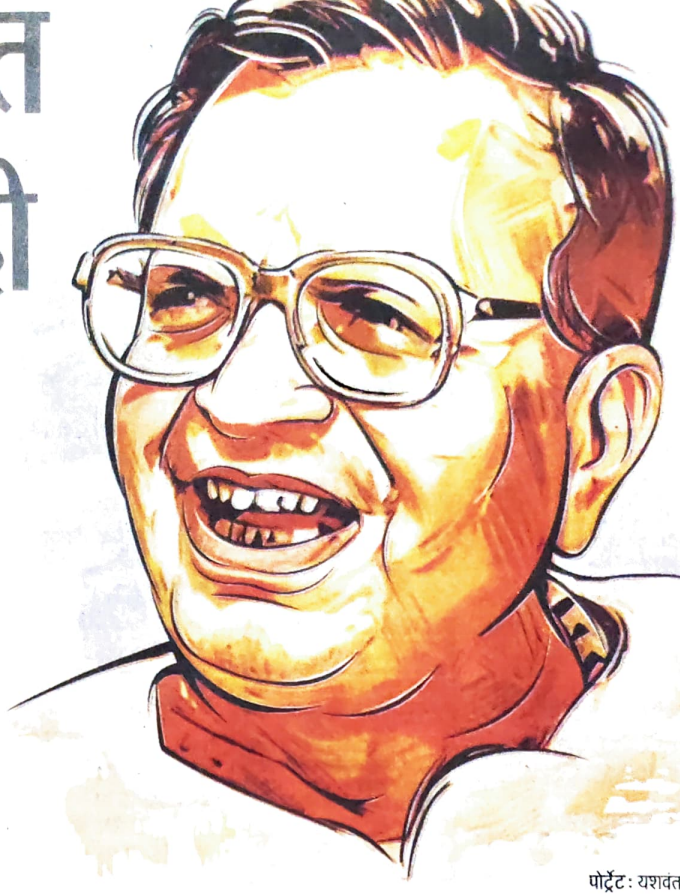

पोर्ट्रेट: यशवंत नामदेव

कालजयी साक्षात्कार - 63

विद्यानिवास मिश्र

जन्म: 14 जनवरी, 1926, निधन: 14 फरवरी, 2005

■ **आप संस्कृत के विद्यार्थी रहे। छात्रकाल में अंग्रेजी भाषा-साहित्य अध्ययन का प्रधान विषय रहा। हिंदी लेखन में कैसे प्रवृत्त हुए?**

बचपन से ही घर में संस्कृत का पूरा वातावरण रहते हुए भी मैं हिंदी की ओर आकृष्ट हुआ। मेरे ननिहाल में भारतेंदु युग के पं. बिंदेश्वरी प्रसाद त्रिपाठी रहते थे। वे नाना के भाई लगते थे, उन्होंने अपनी बहुत सारी किताबें मेरे नाना के पास रख दी थीं। खड्ग विलास प्रेस और भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित पुस्तकें तथा भारतेंदु युग की पत्रिकाएं वहां पर पड़ी रहती थीं। मैं छुट्टियों में वहीं जाता था और कौतुकवश इनका अवलोकन करता। धीरे-धीरे यह मेरा व्यसन ही बन गया और जब मैं हाई स्कूल में था, तभी से मैं निबंध, कहानी और कविता आदि लिखने लगा। मैंने इंटरमीडिएट तक हिंदी औपचारिक रूप से पढ़ी पर हिंदी पुस्तकों को पढ़ने और खरीदकर पढ़ने का चाव बढ़ता ही गया। मैंने हिंदी को जीविका का साधन नहीं बनाया। मेरा कर्मक्षेत्र संस्कृत था और भावक्षेत्र हिंदी।

■ **किन विशिष्टताओं के चलते निबंध विधा आपकी सजातीय विधा बनी?**

निबंध विधा दो कारणों से मेरी अपनी विशिष्ट विधा बनी। एक तो इसमें किसिम-किसिम की गूंजों-अनुगूंजों को संश्लिष्ट करने की संभावना दिखी। कविता की अपेक्षा इसमें लोकजीवन में रमनेवाली प्रवृत्ति के लिए अनुकूल अवसर था। दूसरा कारण यह था कि बचपन से ही मुझे गद्य काव्य की कसौटी होने के कारण लेखन की चुनौती जैसा लगा। बाणभट्ट और दंडी जैसे संस्कृत लेखक और भारतेंदु हरिश्चंद्र, माधव प्रसाद मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, रघुवीर सिंह, वियोगी हरि, राय कृष्णदास, महादेवी वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय जैसे हिंदी के वरेण्य लेखकों का गद्य मुझे आकृष्ट करता रहा। बंगला के प्रसिद्ध लेखक बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की रचना 'कमलाकांतेर दफ्तर', रवींद्रनाथ ठाकुर की साहित्य-चर्चा संबंधी रचनाएं मुझे बहुत भाईं। अंग्रेजी के व्यक्ति-व्यंजक रचनाकारों में रॉबर्ट लुईस स्टीवेन्सन, थॉमस डी क्विंसी, विलियम हेजलिट जैसे रचनाकारों की रम्य रचनाओं ने और मॉन्टेन तथा कुछ अन्य ने भी अपनी रचनाओं से मुझे अत्यधिक आकृष्ट किया। इस कारण मैं निबंध रचना के माध्यम से अपने को पहचानने की कोशिश करने में सार्थकता पाने लगा।

■ **इस धारणा से आप किस हद तक सहमत हैं कि हिंदी में स्वच्छंद चेतना का प्रवेश कविता से पहले गद्य की सशक्त विधा निबंध से हुआ?**

मैं इससे पूर्णतः सहमत हूं कि आधुनिक युग का प्रारंभ और स्वाधीन रूप से सोचने का प्रारंभ आधुनिक हिंदी गद्य से है। आधुनिक हिंदी कविता उसके बाद रंगमंच पर आई है। यह भी सही है कि भारतेंदु युग के लेखक जितने सशक्त गद्यकार थे, उतने कवि नहीं। हिंदी कविता में हिंदी गद्य जैसी चेतना जो प्रारंभ में नहीं दिखी, उसका कारण यह है कि कविता को एक भाषा दी हुई थी, जबकि गद्य के साथ ऐसा नहीं था। इसका यह अर्थ नहीं कि भाषा ही नहीं थी, पर ऐसी साहित्यिक भाषा नहीं थी, जो हिंदी की उन्मुक्त, उदार, पर सामान्य जन से जुड़ी हुई मनोवृत्ति से मेल खाती हो। हिंदी कविता को ब्रजभाषा से मुक्त करने में समय लगना ही था और ब्रजभाषा को दूसरे रूप में ढालने में भी समय लगना ही था।

■ **ललित निबंध को उसकी ललित, रम्य मुद्रा के कारण रूपवादी साहित्य कहा जाना उचित है?**

रूपवाद की चर्चा करनेवालों की सद्भावना से मैं सहमत नहीं हूं। मैं यह जरूर मानता हूं कि साहित्य में अकेले न संवाद होता है न अर्थ। दोनों एक साथ नहीं होंगे, तो साहित्य होगा ही नहीं। इसलिए रूप अर्थ में घुला नहीं और अर्थ रूप में उतरा नहीं तो दोनों और चाहे जो हों, साहित्य नहीं होंगे।

■ **सांप्रतिक लेखन को देखते क्या आपको भी यह त्रासद अनुभव होता है कि पूर्ववर्ती पीढ़ी की तुलना में आज के लोगों की प्रतिभा-क्षमता कमजोर है?**

मुझे यह नहीं लगता कि आज की पीढ़ी की प्रतिभा क्षमता कमजोर है। चूंकि लिखनेवालों की पहले की अपेक्षा बहुत भीड़ हो गई है तथा लिखना व्यवसाय और फैशन हो गया है? इसलिए प्रतिभाएं विरल दिखती हैं, पर प्रतिभाएं कमजोर नहीं हैं। यदि कमजोर हो जाएं तो लेखक का जीना ही मुश्किल हो जाए। हर एक के मन में यह आकांक्षा रहती है कि अपनी चाभी किसी को सौंपकर जाए और बिना उत्तराधिकारी में विश्वास किए अपनी चाभी नहीं सौंपी जा सकती।

■ **क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि सत्तोत्तरी कवि-पीढ़ी के लोगों की तरह निबंधकार भी एक ही राग तथा मुहावरे को उच्चार रहे हैं और उनका स्वकीय वैशिष्ट्य कमजोर हो रहा है?**

मैं एकरूपता को कभी नहीं सराहता और उससे हमेशा उद्वेलित ही होता हूं पर एकरूपता सामूहिक अपसंस्कृति की देन है और इसीलिए कुछ हद तक अपरिहार्य है। लोगों की लाचारी है कि एक ही ढंग के बने मकान खरीदें। इसी तरह लोग लाचार हैं कि समूह संचार-साधनों में ढली भाषा का इस्तेमाल करें, ताकि उसकी बिक्री हो सके। इस एकरूपता को मैं बहुत बड़ी चुनौती के रूप में देख रहा हूं और मैं निरंतर भाषा और शैली की जड़ता को तोड़ने की कोशिश कर रहा हूं। लोग क्या कर रहे हैं, लोग कैसे 'महसूसने' के पीछे दीवाने हो रहे हैं, बिना यह जाने कि जो यथार्थ भोक्ता है, वह भोगने की बात नहीं करता। भोगने की बात वही करता है, जो अपने यथार्थ भोग को सबके भोग की हंडिया में डालकर बड़ी धीमी पर बड़ी देर तक निधूम आंच में पकाता है और तब फिर यह दावा नहीं करता कि यह मेरा भोगा हुआ यथार्थ है, न यह दावा करता है कि यह सबका भोगा हुआ यथार्थ है। वह पाठक को सिर्फ आमंत्रण देता है, अब जो कुछ है वह तुम्हारा है।

(साभार : 'विद्यानिवास मिश्र रचनावली', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से संपादित अंश)